द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

औच्चारणिक अवयव - 2

4. तालु (**Palate**) - मुख विवर में ऊपर की ओर तालु है जिसके दाँतों या मसूढ़ों से कण्ठ स्थान तक चार भागों में विभाजित किया जाता है। (i) कोमल तालु (ii) मूद्र्धा (iii) कठोर तालु (iv) वर्त्स्य

 (i) कोमल तालु (Soft **Palate**) - यह मुख विवर का सबसे पीछे का भाग है। वहाँ कोमल माँस का पिण्ड सा लटकता प्रतीत होता है। इसी को कुछ लोगों ने अलिजिह्वा नाम भी दिया है। यह ऊपर नीचे आ सकता है और आवश्यकता पड़ने पर नासिका मार्ग को भी बंद करता है। कोमल तालु की स्थिति बताते हुए डाॅ. हरीश शर्मा ने लिखा है कि ’’मुद्र्धा से भीतर की ओर व अभिकाकल से आगे की ओर स्थित कोमल तालु कहलाता है। ’क‘ वर्गीय ध्वनियाँ कोमल तालव्य ही हैं।

 (ii) मूद्र्धा (**Cerebrum**) - मुख विवर का सबसे ऊँचा भाग मूद्र्धा कहलाता है। यह भाग अत्यंत चिकना भी होता है। कुछ विद्वान दाँत के पीछे के भाग या कठोर तालु के निकट के खुरदरे भाग को मूद्र्धा के नाम से पुकारते हैं, जो गलत है। वास्तव में कोमल तालु और कठोर तालु के मध्य का भाग मूद्र्धा कहलाता है और जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा इस क्षेत्र का स्पर्श करती है, वे मूर्द्धन्य कहलाती हैं। संस्कृत के ’ट‘ वर्ग, ’ऋ‘, ’ष‘ ये मूर्द्धन्य थे। हिन्दी के ’ट‘ वर्ग को नए-पुराने सभी भाषा वैज्ञानिकों द्वारा मूर्द्धन्य माना गया है। मूर्द्धन्य ध्वनियों के उच्चारण में जीभ की नोक को उलटकर (मूद्र्धा को) स्पर्श करना पड़ता है। अतः इन ध्वनियों को प्रतिवेष्ठित भी कहा जाता है।

 (iii) कठोर तालु (**Hard Palate** ) - मूद्र्धा एवं वत्र्स के मध्य का भाग कठोर तालु कहलाता है। यह भाग खुरदरा एवं चिकना ढलवा होता है। जब जिह्वा इस भाग का स्पर्श करती है तो जो ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, वे कठोर तालव्य ध्वनियाँ कहलाती हैं। इनको तालव्य भी कहा जाता है। हिन्दी के ’च‘ वर्ग का उच्चारण स्थान यही है। संस्कृत के ’इ, ई‘ ’च‘ वर्ग, य, श आदि का उच्चारण यहीं से होता था किन्तु, हिन्दी में अब ये प्रायः आगे आ रहे हैं और वत्र्स के निकट से उच्चरित होते हैं।

 (iv) वर्त्स्य (**Alveala**) - ऊपर की दंत पंक्ति की जड़ों से भीतर की ओर उठा हुआ भाग वत्स्र्य कहलाता है। दूसरे शब्दों में ऊपर के मसूढ़ों के निकट का अन्दर की ओर वाला भाग वत्स्र्य कहलाता है। यह दन्त पंक्ति एवं कठोर तालु के मध्य का भाग होता है। जिह्वा का अग्र भाग इस भाग से स्पर्श करता है और जो ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, वे ध्वनियाँ वत्र्स कहलाती हैं। अंग्रेजी के ’ट, ड‘ हिन्दी के ’ण, ल, र, स, झ, ज‘ का उच्चारण जिह्वा के द्वारा इसी भाग के स्पर्श से होता है, अतः, ये ध्वनियाँ वत्स्र्य हैं।

 5. जिह्वा (**Tongue**) - मुख विवर के निचले भाग में जिह्वा है। जिह्वा उच्चारण अवयवों में सबसे महत्त्वपूर्ण है। इसी कारण इसके पर्याय वाणी, जबान (अरबी) या स्पदहनं (लैटिन) आदि भाषा के पर्याय बन गए हैं। प्रायः सभी भाषाओं की अधिकांश ध्वनियाँ जीभ की सहायता से ही बोली जाती है। साधारण अवस्था में जीभ ढीली पड़ी होती है। बोलने में वायु अवरोध या विशेष आकृति का गूँज विवर बनाने के लिए हम इसका प्रयोग करते हैं। जिह्वा को पाँच भागों में बाँटा जा सकता है - नोक, अग्र भाग, मध्य भाग, पश्च भाग और मूल।

 जीभ दाँत या तालु के विभिन्न भागों को छूकर या उनके समीप आकर या उत्क्षेप लोढ़न (तनकर और ढीला छोड़कर), प्रकंप आदि करके ध्वनियों का निर्माण करते हैं।

 6. दन्त (teeth ) - उच्चारण में दाँतों का भी सहयोग रहता है। यों तो दाँतों का मुख्य कार्य भोजन को चबाना है। दन्त, मूल और वत्र्स को तालु का भाग मानना अधिक उपयुक्त जान पड़ता है। शुद्ध, कण्ठ्य ध्वनियों में जिह्वा की नोक अवश्य स्पर्श करती है। जब ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा अथवा ओष्ठ दाँतों का स्पर्श करते हैं तो दन्त्य अथवा दन्तोष्ठ्य ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। जब दाँतों का स्पर्श जिह्वा करती है तो शुद्ध दन्त्य और जब ओष्ठ करता है तो दंतोष्ठ्य ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं। उदाहरण - ’त‘ वर्ग (त, थ, द, ध) के उच्चारण में दाँत जिह्वा की सहायता करते हैं तो ’ब, फ‘ में निम्न ओष्ठ सहायता करता है।

 7. ओष्ठ (lips) - उच्चारण अवयव में ये अंतिम अवयव है। उच्चारण करते समय जब दोनों ओष्ठ काम करते हैं तो उच्चरित ध्वनियों को भी ओष्ठीय ध्वनियाँ कहते हैं। उदाहरण - हिन्दी के ’प‘ वर्ग में उच्चारण में ओष्ठ सहायक होते हैं। दन्तोष्ठ्य ध्वनियों के उच्चारण में नीचे का ओष्ठ और ऊपर की दंतावलि सहायक होती है। उदाहरण - ’ब फ‘ के उच्चारण में ये दोनों एक-दूसरे का स्पर्श करते हैं। स्वरों की संवृत्ति, विवृत्ति आदि में भी होठों का महत्त्वपूर्ण कार्य होता है।